

महादानन्ददायकं दं २ वं
भाजुवरसिं डनभाजीव डसत
भाजुरत्न ४॥ ते जा रा जा भ न न

अमुग्ध

भोभोरानं आअयरागगं हंतव्यं

स्पतीमो ति

समस्तकोसलपात्रक

श्रीहमवान्

तेअपरमितामुज्ञानसुवं चित्तं

गोशायनमः अथप्रज्ञानां मधिपप्रभाते जाया
हितगंधमाल्पधनायुपीत प्रती व ड वत्सोपशो

कल्पमुर्वेमुमोच । श्रीगोशायनमः

आभयवधि

1799

अ
क

निस्नाः य वे द वाः स न चि व ॥ स र्व कूः स ग ना वू छा ध र्म वा ऊ रू धा ग नः स म न रू डा र ग व
मा न कि लो क कि डि नः ॥ य ट रि कू द श व लाः द य वा दी वि ना य कः ॥ म नी दुः शी घ न मा क
म निः ॥ अ कू म नि मू यः ॥ सः ॥ अ कू सि रू स नो र्थः सि ह ॥ शो छा द नि धु सः ॥ गो न म श्र क व भू य
मा या द वी स न श्र सः ॥ उ क्ता ल रूः स रू व कः य न म यी पि ना म रूः ॥ रि न व य ग कू ला के गः
स य रू थ रु नान नः ॥ धा ना इ कू या नि रू ॥ रि ॥ वि नि किः क म ला स नः ॥ स कू य जा य नि वें धा वि धा
ना वि न रू य विः ॥ वि ध क रू व रु व कू रू रू ला क श्र य अ ऊ ॥ वि पू त्रा ना य दः कू कू व कू ॥

प्रधानपुत्रोयहपुत्रप्रधाननकाकः कलशविष्णुन्यामक
कामलमर्कन x 5

विष्णु नमः ॥ दामादना रुषी कर्मः केजवामाध वः स्वरुः ॥ देह्या विः युधु नी का क्का ला वि द्या ॥
ग नू उ ध रुः ॥ यी नाम्ना ॥ श्रुतः ॥ गजी विष्ठ क्का ना रु नाई नः ॥ उ य द्रु ॥ द्या व न रु ध्रु क या
धि श्रु रु ध्रु रुः ॥ य द्रु ना ल म ध्रु वि य द्वा स द व सि वि कु मः ॥ दे व की म द न रु रु विः ॥ शी य निः
यू न्धा ल मः ॥ व न माली व लि ध्रु मी कें सा ना नि न ल रु रुः ॥ वि श्वं रु नः ॥ के ट रु डि दि ध्रु शी व न
लाला रु न रु व स द वा इ स्य रु न कः ॥ स न वा न क कें द्रु रु रिः ॥ व ल रु रुः ॥ य ल म ध्रु व ल दे वा इ य
ना रु रुः ॥ य व ली न म रु ना मः ॥ काम या ला रु ला यू धः ॥ नी ला म ना ना हि ल य लाला कौ म वली

नी शुक्लाः यवदक्षिणयक्षिमाः उरुवादिगुदीची स्यादिभ्यस्तुल्यदिग्गुणं ॥ १० ॥
 किः यि हयानेनैवा गोवत्तुल्यमवत्तुल्यं कवत्तुल्यं शः यनयः यवी दीनी दिग्गुणं कमात्तुल्यं ॥
 वविः शुक्रो मही सुनः स्वर्णं नूतनं जाविष्यं वृक्षा वृक्षस्य निश्चिन्ति दिग्गुणं ॥ ११ ॥
 दाः ॥ न वावत्तुल्यं शुची को वा मनः कम्पदा ज्ञेन ॥ यद्यदन्तः सावत्तुल्यं ॥ सुयनी कथः ॥
 दिग्गुणं ॥ कविः ॥ उमकविला यिज्ञे लान् यमा कमात्तुल्यं ॥ नामकं शुक्रं दक्षि वा जे नावा ॥
 ज्ञेनावती ॥ को वा ययं त्वयदिग्गुणं दिग्गुणं त्वदिकस्यो ॥ अथ नृजं त्वं न वालं वक्रवा ॥

श्री
अ

न

लकुम शुलं ॥ अर्जुनमथा वाची त्राहसु नयिन् वला रुकः ॥ आवाध नाडल वत्तुल्यं त्वानिदा ॥
 वृहत्तुल्यं घनं जीमन्तमदि नडल मन्त्रं मथानयः ॥ कादं विनी मन्त्रमाला विष्मन्त्रं वत्तुल्यं ॥
 सुनिर्गं गङ्गा नं मन्त्रं निधोषं तसिनादि ॥ शम्या शनकं रुद्रादि नो वा वत्तुल्यः ॥ रुद्राय तानादि ॥
 सोदा मिनी विष्णु केला वयला अयिः सुकैथं वैजनिष्ठा मन्त्रं ॥ निविज मन्त्रं ॥ १२ ॥
 यं शक्रं नृसुदेव ॥ शक्रादिर्गं वृष्टि वृष्टे नृदिद्या नं ॥ वयं हा वृगुहो मन्त्रं ॥ आवा स मन्त्रः ॥
 आसा नः ॥ शोक्र नाः ॥ कदा ॥ रुद्राः ॥ वयं यला सुकवका मन्त्रं ॥ वृष्टि वृष्टि नं ॥ अर्जुनो वा ॥

त्रि

स्य

४४

ॐ

वधायंति त्वं कर्त्तुं नय वा नक्षत्रं यि धा ननि वा धान यि धा न नृद नानि च ॥ हि मां भु यदु मा
धनु ॐ नृः क मू द वा न्ध वः ॥ वि धुः स धी गुः ॥ भु यं भु वा व धी धा नि मा य नि ॥ अ धा उ वा
ह कः ॥ सा मा ॥ य म् ॥ म् ॥ कः ॥ क ला नि धि ॥ धि ॥ क वा ज ॥ म म ध वा न नृ नृ म ॥ कृ या क न ॥ क ला
तु वा उ ॥ सा ला ला वि धा ॥ म् ॥ म् ॥ ल नि य ॥ रि रुं ॥ क ल ख ॥ तु वा य सा धा ॥ इ म म ॥ म क ॥ च
दि का को म दी धा ला य सा द म् ॥ य स न ना ॥ क ल को को ला के न व चि ज्ञ ल अ न ल क ॥ स व
मा य न मा ला ला ला का नि यू नि यू वि धा म् ॥ व धा य म् ॥ नी ला न नृ वा ल ॥ म् ॥ मु हि न हि म म

६७

या लयं म हि का वा थ हि मा नी दि म स र् रु नि ॥ मी न नृ धा नृ द र्थाः ॥ स धी मः ॥ मि जि वा ऊ
॥ रु मा न ॥ मी न ल ॥ मी ना हि म ॥ स क म् ॥ लि नै का ध ध व उ र् रु न या दिः ॥ सा द ग म् ॥ रु
क म् ॥ स र् रु व धा मे ना व नृ दि न र् रु व ला या म् ॥ डा स ध मि ली ॥ न नृ नृ म् ॥ र् रु नृ नृ ना न व का य
उ वा मि यो ॥ दा कृ यि धा मि नी ला दि ना नो म् ॥ ध य ग मि नी ॥ वा धा वि ज्ञा ला य ध नृ मि ध
नि को ॥ अ वि रु या ॥ स मा ध नि रु स्यः ॥ या वृ य दा रु द य दा मि यः ॥ म् ॥ ग जी व म् ॥ ग शि व रु
स्मि न् वा य रु य धी ॥ रु ल ला रु दि नो द ॥ ना न का नि व स क्रि य ॥ रु रु स्य निः ॥ स वा वा र्था

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

३

मायायाश्चैवमकादभयवामाभ्युपसंहारमागंश्याहायतिकमुयःशिवनेषसहस्रोद्योनयामाधयहः
 लुहमास्याकयसःहलुहिकीस्यान्वेनवेनिकामयःवेमाधमाधवाजाक्षककुकुःशुचिस्त्रयान्त्रि
 आयादभयवामाभ्युपसंहारमागंश्याहायतिकमुयःशिवनेषसहस्रोद्योनयामाधयहः
 लुहमास्याकयसःहलुहिकीस्यान्वेनवेनिकामयःवेमाधमाधवाजाक्षककुकुःशुचिस्त्रयान्त्रि
 आयादभयवामाभ्युपसंहारमागंश्याहायतिकमुयःशिवनेषसहस्रोद्योनयामाधयहः
 लुहमास्याकयसःहलुहिकीस्यान्वेनवेनिकामयःवेमाधमाधवाजाक्षककुकुःशुचिस्त्रयान्त्रि

九

世

[illegible]

327

श्री

श्रु

विः। हनुनाकावसंवाजनिदानंलादिकानर्ध॥ कुरुश्रुत्मायुवःयधनंयकनिक्रियां। विहायःका
लिकावस्तुःगुह्यःसर्वंनरुक्तमः॥ कुरुजननरुक्तानि कुरुनित्यरुक्तवः। यावीरुवेननाजनीरुक्तयुः
मनीविद्यः॥ विरुक्तवनाददयंस्वार्कं हत्मानसम्मानः। वृद्धिर्महीयाविषयधायस्तसम्वीमनिः। यथाय
लक्षित्विस्तमित्यनियन्तुह्नाफिवेननाः। धीधीनधावनीमेषासंकल्पः कर्ममानसं। विरुक्तगमनत्का
वृत्तसंस्थाविवाचनधा। अथास्तवर्ककंडहाविविकित्साकुसंगयः। संहदादायनोवाथसमोनिधुयनिधय
॥ मिथ्यादृष्टिनास्मिकनाश्यादादाहचिकनं॥ समोसिद्धाकनादाकोशकिमिथ्यामनिजमः॥ संविदाग

१२
१२

यमिहानीनियमाद्यवसंगवा॥ अंगीकात्रायगमयनिसर्वसमाधयः। भाकृधीहनिमन्युविह्वनंमिः
त्यंशमृथाः। मृक्किः केवल्यनिर्वाद्यथानिःशयसामर्ग॥ भाकृयवर्ग्यथाह्वनमविद्याह्वननिःमिः
यां। नृयंशदात्रसस्यर्गगन्ध। अविषयाश्रमी। लभचनां॥ द्विधाथांश्चद्वयीकंविषयीद्वियं॥ कर्मद्विय
कुयायादिमनानेजादिधीद्वियं॥ कुवत्रमुकवाथाश्रीमधुनालवनः कटुः॥ निक्कासूत्रवसाःधूसिनद
सूयउमीनिष॥ विमदाह्वयनिममलागंधजनमनाह्वे। ओमादः। सानिनिहात्रीवाश्लिगंत्वमागुह्य
॥ समाकर्षीकुनिहोत्रीसूत्ररिखीधनयोधः। ॥ ह्वगन्धःसर्गधिःस्यादाभादीमखवासनः॥ यमिगीधिकु

श्र

दृष्टि विमं स्यादामर्गं धियः शुक्लं शुक्लं शुक्लं विशदं कथा पुनः ॥ अथ दानः सितालो प्रावल
को धवला र्शेन धाद्विष्टाः ध्यातुः पांशु नीवत्या धुसु धुसु नः ॥ कृष्ण नीलासितं धाम कालं धाम लभत का
ः ॥ यो गोला नो ह निडा रः या ला ला ह नि गो ह नि त् ॥ प्रादि गो लादि गो न कः ॥ धाः को क न द द्रु विः ॥ अथ क
ना गस्तु नृदाः ॥ ध्वन न क मु या ट लः ॥ धा वः ॥ धा क यि ॥ धा धु म धु म ली कृष्ण लादि न ॥ क ठा नः क यिलः
यि क यि र्गं लो क द्रु यि र्गं लो चि र्गं कि मी न क ल्मा ष ण व ली ना ध क र्च न ॥ गुह्यं गुह्यं दयः यं सि गुह्यं लि र्गं
मु न द नि ॥ वा क्को ठ रा न की रा वा गो वी र्ग धी स न ह नी ॥ आ हा न उ के ला यि र्गं रा वि र्गं व च न व च ॥ अथ न

१३

धाय न दः ॥ स्या द्वा मु ग व मु वा वा कः ॥ निद्रु सु व क व था वा क्कं क्रिया वा का न का वि ता ॥ धृतिः ॥ मु वे द आ र्म
य मु यी ध र्म मु न दि धिः ॥ मि याम क्क म य रु यी ॥ नि वे द मु य मु यी ॥ निद्रु त्या दि धु न र्ग मा का न य ध वो र्मो
॥ ॥ नि हा सः ॥ यू ना वृ ल म् दा ला श मु यः ॥ स नाः ॥ आ नी व की द धु नी नि र्ग क वि द्या र्थ धा मु था ॥ आ र्था यि का
य ल द्वा र्था यू ना र्ध य के ल र्ग ॥ य व च क ल्य ना क था य व द्धि का य र्ग लि का ॥ स्म नि मु ध र्म संहिता समा ह्नि
मु र्ग र्ग ॥ स म स्या रु स मा ना र्था कि म्ब न की रु न धृ नि ॥ वा र्ग य व र्गि वृ ल न उ द नः ॥ स्या द धा क यः ॥ आ र्था क
अरि धा नं च ना म ध यं च ना म व ॥ इ नि वा का न धा क न र्ग र्ग नि व र्ग रि रु नाः ॥ वि वा द श व हा नः ॥ स्या द्वा य स मु वा

ॐ ह्रीं स्वः॥ उथा द्या न उदा हा नः शयनं शय थः यमा न्ना य ह्म न्ना गः य द्वा च य नि वा आ उं रु पं स म ॥ मि
 ॐ ह्रीं श्या ला ला ला नम थ मि ॥ ह्रीं स ग नं ॥ अ रि शयः य द्वा द मु द्वा दः सा द न्ना ग रुः ॥ य गः ॥ की र्ति
 ॐ स मा ह्म व स वः ॥ स ग नं न निः ॥ मु तिः ॥ आ भु ति नं दि ति नू क म च्छे य ह्म रु द्वा य द्वा ॥ का कः ॥ मि या मि का ना
 यः ॥ क र्त्ता द्य दि ति ध नः ॥ अ व ह्म रु य नि च्छे द य नो वा द य वा द व न् ॥ उ य का ला ॥ रु गु य्वा व क ला नि दं च
 ग रु द्वा या नू य म रि मं वा दः ॥ सा रु ह्म नं त्व य का न गीः ॥ य स नि च्छे उ या लं रु रु स्या त्य नि स व द्वा नं रु वा अ
 न द्या यः ॥ सा दा का ला म थ नं य नि ॥ सा दा ला व द्वा मा ला यः ॥ य ला यान थ क म्ब वः ॥ अ ला याम् रु रु मि वि ला यः ॥ य

वि द व नं ॥ वि य ला या वि ना ला किः ॥ सं ला या ला य ह्म मि थः ॥ स य ला य स व व न म य ला य मु नि रु वः ॥ स दं श वा य
 वि क र्त्ता य्वा रु दा मु ति वू रु न ॥ उ व नो वा ग क ला दी स्या क ला रु रु ला मि का ॥ अ त्य थ म प्र वं गं लं स ग नं रु द
 यं ग म ॥ नि वृ नं य नू यं अ म्म म ह्म लं स नू रं यि थ ॥ स य थ सं क ल कि रु य न स्य व य ना रु न ॥ ल य व ह्म य दं य रु नि
 न रु त्व नि ना दि नं ॥ अ व रु र्त्ता स नि रु व म व द्वा सा द न थ क ॥ अ न रु व म वा अ सा दा रु नं रु म्ब थ क ॥ अ थ मि रु
 सि य म वि स्य रु त्व नू रं वि न थं व वः ॥ स यं रु थ्म रु र्त्ता स ग म्म नि वि रु रु रु ति ॥ म रु नि ना द नि न द ध नि धा न व रु
 ना ॥ सा न नि धा वि नि रु दि ना द नि स्या न नि रु ना ॥ अ व वा ना व र्त्ता व वि ना वा अ थ म म्म वः ॥ स नि नं व मु य ह्म नां रु

कृत्वा रिषकायामि न वासु रुदिनी ॥ अवा म्म मवत्तम को वा उ म्म लमु वा प्रिय ॥ अवा माना थवा लाय ॥
दास नार्थ मुमा निवः ॥ अकि कारु गिनी कृष्ण निवः सुख सम ॥ हलु हं ऊ हला कान नो वं वरी सखी यमि
॥ अंग हा वा ॥ जे विरु या र्थ ऊ नारि नयो समी ॥ निवृत्त त्वं ग सत्वा र्था दं रि षा गै क सा त्विक ॥ अ न वी न क
नू धा दु न ह स्य रु या न काः ॥ वी रु त्म नो ड व न साः ॥ अ न वः ॥ अ वि नू क्त नः ॥ उ त्सा ह व द नो वी नः ॥ का नू धी क न
धा धु धा ॥ रु या द या नू या नू कं या य नू का कं या स्या य नू का ॥ अ य थ ह सः ॥ हा सा हा स्यं व वी रु त्म वि रु न कि
छि दं द य ॥ वि स थ दु र मा ध य कि न म थ थ रु व र्वा ॥ दा नू र्धं री व र्धं री मं री र्वा धा नं रु या न कं ॥ रु य क न

य नि रु यं नो डं रु ग म मो नि ष ॥ व रु दं न द न ग सो री नि रीः सा ध रं रु यं ॥ वि का यो मा न सा हा वा नू रा व रा व री
ध क आ ग वी रि मा ना र्द का यो मा न धि रु स म न्त्र निः ॥ अ ना द वः य नि रु वः य नि रा व सि य कि या ॥ नो ज व मा न
ना व रु अ व रु ल म सु रु र्धं ॥ मं द रू र्जो मु या ल ऊ वी ज सा य रु या नू नः ॥ अ नि सि ति हा रि थ अ उ य न ख वि यः
य स्य हा ॥ अ रु कि नो र्थ स ग रु दा या वा या गु ष ष यि ॥ वे री वि ना ला वि दं धा म नू हा को रु मु क मि र्था ॥ य
अ रु या नू ना य ध वि य नी सा व ॥ य यि ॥ का य का धा म र्थ वा य य नि या नू दू क्ते मि र्थो ॥ अ नो रु वे नि न जी ल
मू ना द धि रु वि न मः ॥ य मा ना यि य ना हा र्द ध म स हा थ दा ह र्द ॥ अ रु को रु स्य ह हा ह नू र्वा र्ण ति य मा म ना न

थः। कामासि लाक कव्ये समहान् लालसा दयाः। उवाधिना धर्मविनायुं साधिमो नसी यथा। साधिकास्म
 निना ध्यानमत्कलिकलिके सम। उत्साहो धवसायः सात्वती यमनिना किं ता क। कवटा इमी बाज दशायध
 य ध्रुव के नवे। कसुनि निरुतिः। अर्थमादानव धानना। कोरु हलं च कुकुर्की कोरु कं च कुकु हलं। कोरु
 विलासविवाकविजुमालति रंन था। हलाली लोखमी हवाः क्रियाः। शुभं वराव जाः। उव कलिय वीहासाः
 कोठालीला च नमवे। या जाय दहल कं व कोठा खला च कुद नं। धर्मानि दाद्यः। स्वदः सा नृपलया नष्ट वंष्टः
 ना। अवहिल कान युधिः। समो सध गसं जु मो। सादा चू निरु कं हासः। सात्यासः समना कस्मिन्। मधुमं सा

द्विहसिर्गनामा वा नाम हवर्ध। कदिनं नृदिनं कुर्वं हं रातु किव हं रधां वियलं रा विसं वा दा निज नं सर्वल
 नं सम। सा निडा भय नखायः। सप्रः संवे। स्यायि। न डी यमीला नृकुटीरु कुटिः। कुटिः। स्रियः। अहृष्टिः। स्रियः।
 दशो मात्रि स सिद्धि य रुनी विम। स्रय च्छरा व धनि स्रय धवैय थूः। की था थ रुध उ च्छधी मरुद च्छव उः
 स्रवः। स्रय वृवर्जः। स्रय म वरि ह रुनी नाम लिगानु स्रय नादिका। स्रय थ म व र्जः।

रक ११

